18. 6. 67 ओमशांति प्रातःक्लास

बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। अक्सर करके मनुष्य शांति को बहुत पसंद करते हैं। अगर कोई घर में खिटपिट होती है तो अशांति रहती है। अशांत होने से दुःख भासता है। शांति से सुख भासता है। यहां तुम बच्चे बैठे हो। तुमको सच्ची शांति है। तुमको कहा गया है कि बाप को याद करो। अपने को आत्मा समझो। आत्मा में जो आधा कल्प से अशांति है वो निकालनी है। शांति के सागर बाप को याद करने पर तुमको शांति का वर्सा मिल रहा है। यह भी तुम जानते हा कि शांति की दुनियां और अशांति की दुनियां और2 है। आसुरी दुनियां, ईश्वरीय दुनियां,सतयुग,कलियुग किनको कहा जाता है। यह कोई मनुष्य मात्र नहीं जानते हैं। तो जनावर बुद्धि ठहरे ना। तुम कहेंगे कि हम भी नहीं जानते थे। पैसे वाले को पोजीशन वाला कहा जाता ह। गरीब और साहुकार समझ तो सकते हैं ना। वैसे ही तुम भी यह समझ सकते हो कि ईश्वरीय औलाद और आसुरी औलाद है। अभी तुम मीठे बच्चे समझते हो कि हम ईश्वरीय संतान हैं। यह तो पक्का निश्चय है ना। जानते हो कि आसुरी सम्प्रदाय अथवा औलाद किसको कहा जाता है यह सिर्फ तुम ब्राह्मण ही समझते हो। समझते हुये भी भूल जाते हो। तुम ब्राह्मण ही समझ सकते हो कि हम ब्राह्मण और ईश्वरीय संतान हैं। हर समय वो ही खुशी रहनी चाहिए। बहुत थोड़े हैं जो यथार्थ रीति से समझते हैं। सतयुग में है दैवी सम्प्रदाय। कलियुग में है आसुरी सम्प्रदाय। पुरुषोत्तम संगमयुग पर आसुरी सम्प्रदाय बदली होती है। अभी हम शिवबाबा की औलाद बने हैं। बीच में भूल गय थे। अभी फिर इस समय जाना है कि हम शिवबाबा की संतान है। वहां सतयुग में होते हैं तो अपने को ईश्वरीय औलाद नहीं कहलाते हैं। वहां है दैवो औलाद। उनके पहले हम आसुरी औलाद थे। अभी ईश्वरीय औलाद बने हैं। हम ब्राह्मण ब्र.कु.कु. है। रचना है एक बाप की। तुम सब भाई–बहनें हो और ईश्वरीय औलाद हो। तुम जानते हो हमको बाबा से राज्य मिल रहा है। भविष्य में जाकर हम दैवी स्वराज्य पावेंगे। बरोबर सतयुग है सुखधाम। कलियुग है दुःखधाम। तुम संगमयुगी ब्राह्मण ही जानते हो। वो है कलियुगी। कलियुगी घर में कलियुगी दुनियां में हैं। यह भी तुम देख रहे हो कि एक ही घर में बाप कलियुगी है तो बच्चा सतयुगी बन रहा है ;क्योंकि ईश्वरीय औलाद बना है। आत्मा ही ईश्वरीय औलाद। यूं तो हम सब आत्माओं का बाप परमात्मा हैं। यह भी जानते हो बाबा स्वर्ग की स्थापना करते हैं। वो रचता है ना। नर्क का कियेटर तो नहीं है। तो उनको कौन नहीं याद करेंगे। तुम मीठे2 बच्चे जानते हो बाप स्वर्ग की स्थापना कर रहे हो। वो हमारा बहुत मीठा बाप है। हमको 21जन्मों के लिए स्वर्गवासी बनाते हैं। इससे ———वस्तु कोई होती नहीं है। यह समझ रखनी चाहिए कि हम ईश्वरीय औलाद हैं। तो हमारे में कोई ऐसा आसुरी अवगुण नहीं होना चाहिए। अपनी ही उन्नति करनी है। समय बाकी थोड़ा है। उसमें गफलत नहीं करनी चाहिए। भूल नहीं जाना है। देखते हो बाप सम्मुख बैठा है। जिनकी ही हम औलाद हैं। हम ईश्वर बाप से पढ़ रहे हैं दैवी औलाद बनने लिए। तो कितनी खुशी होनी चाहिए। आधा समय हम आसुरी सम्प्रदाय रहे। बहुत दुःख उठाये। विषय सागर में गोता खाया। जहर पिया। जहर पीने से दुःख, अमृत पीने पर सुख होता है। अभी तुम जानते हो हम तो ईश्वरीय औलाद हैं। ईश्वर बाप आया है बच्चों को ले जाने लिए। बाबा सिर्फ कहते हैं कि मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हो जावेंगे। बाप आया ही ;हैद्धसबको ले जाने लिए। जितना याद करेंगे उतने विकम विनाश होंगे। बाप को ऐसे याद करो जैसे कि कन्या की सगाई होती है, याद बिल्कुल जैसे कि छप जाती है। बच्चा पैदा हुआ और याद छप जाती है। याद तो स्वर्ग में भी छप जाती है, नर्क में भी छप जाती है। बच्चा कहेगा कि यह हमारा बाप है। अब यह तो है बेहद का बाप। जिसस ही स्वर्ग का वर्सा मिलता है। तो उनकी याद छप जानी चाहिए ना। जैसे अज्ञान काल में याद छप जाती है।अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करना है।बाबा से हम भविष्य 21जन्मों का फिर से वर्सा ले रहे हैं।

बुद्धि में वर्सा ही याद है। यह भी जानते हो कि मरना तो सबको ही है। एक भी रहने वाला नहीं है। जो भी ———–थे और हैं सब चले जावेंगे। यह सिर्फ तुम ब्राह्मण ही जानते हो। यह पुरानी दुनियां गई की गई। इसके जाने के पहले पूरा पुरुषार्थ करना है। जबकि ईश्वरीय औलाद हैं तेा अथाह खुशी होनी चाहिए। बाप कहते रहते हैं कि बच्चे अपनी ही खातिर अपना जीवन तो हीरे जैसा बनाओ। वो है डीटी वर्ल्ड। यह है डेवल वर्ल्ड। सतयुग में कितना अथाह सुख रहता है। वो बाप ही देते हैं। यहां तुम बाप के पास आते हो। यहां बैठ तो नहीं जावेंगे। ऐसे तो नहीं कि सब इकट्ठे ही रहेंगे ; क्योंकि बेहद बच्चे हैं। वो आसुरी औलाद फिर 5,50,60करके 100होंगे। निजाम को 500रानियां थीं। फिर बच्चे भी तो सभी इतने होंगे ना। यहां तो तुम थोड़े आते हो। और बहुत ही उमंग से आते हो। हम जाते हैं बेहद के बाप के पास। हम इश्वरीय औलाद हैं, गॉडफादर के बच्चे हैं तो हम क्यों नहीं स्वर्ग में जाने चाहिए थे?गॉडफादर है तो स्वर्ग को रचता है ना। अब तुम्हारी बुद्धि में वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी है। जानते हो कि हैविनली गॉडफादर हमको वहां ले जाने लायक बना रहे हैं। कल्प2 5000वर्ष बाद पढ़ाते हैं। एक भी मनुष्य नहीं जिनको यह पता हो कि हम एक्टर हैं। गॉड फादर के बच्चे हैं तो हम दुःखी क्यों हैं?आपस में लड़ते क्यों हैं?हम आत्मायें तो सब ब्रदर्स हैं ना। आत्मा मैली हो गई है। लड़ाई के मैदान में मैल ही होते हैं। देखो तो एक/दो में कैसे लड़ते रहते हैं। इन जैसा खौफनाक कोई होगा?सारे शहर पर बाम्ब्स फटेंगे और खतम हो जावेंगे। यह आसुरी सम्प्रदाय कितने खौफनाक है। उनको कहा जाता असुर। राक्षस। ब्रदर्स आपस में केसे लडते रहते हैं। लड़कर ही सारे खतम हो जावेंगे। यहां हम बाप से वर्सा ले रहे हैं। बदर्स को आपस में कब भी लूनपानी नहीं होना चाहिए। यहां पर तो बाप से भी लून–पानी होते रहते हैं। अच्छे2 बच्चे भी लून–पानी हो जाते हैं। नाम सुनो तो हैरान हो जाओ। माया कितनी जबरदस्त है। मास2 कब बाप को पत्र भी नहीं लिखते हैं तो समझता हूँ कि क्या हो गया बच्चे को?क्या वो मर गया?माया ते जीते जीत है माया तो हारे हार है। बाप खुद कहते हैं बच्चे दो अक्षर ही सही ,लिखा तो सही। ऐसे भी बहुत हैं जो बिगर किसी के कहे,बिगर पूछे ही एक दो को याद लिख देते हैं। ————————–उसने कहा नहीं। ऐसे ही एक–दो का नाम लिखने की टेव पड़ गई है। जो अच्छे2 बच्चे हैं वो बाप को याद तो पड़ते हैं ना। बाप कितना लव करते हैं बच्चों से। बाप के पास तो सिवाय बच्चों के और तो कोई है नहीं जिनको कि याद करें। तुम्हारे लिए तो बहुत हैं। तुम्हारी बुद्धि इधर–उधर जाती है। धंधे आदि में बुद्धि जाती है। हमारे लिए तो कोई धंधा आदि भी नहीं है। तुम अनेक बच्चों के अनेक धंधे हैं। हमारा तो एक ही धंधा है। हम तो आये ही हैं बच्चों को स्वर्ग का वारिस बनाने। यह भी तुम्हीं बच्चे समझते हो। वो गीता पढ़ने वाले तो कुछ भी नहीं समझते हैं। इनको बाप ने ज्ञान दिया तो भक्ति की गीता एकदम फेंक दी। समझा इनमें तो झूठ है। अभी इनको हम क्या करेंगे?बेहद के बाप की प्रापर्टी सिर्फ तुम्हीं बच्चे हो। गॉड फादर है ना। तो सभी आत्मायें इनकी प्रापर्टी हैं। माया ने छी2 बना दिया है। अब फिर बाप गुल2 बनाने आया है। बाप कहते हैं मेरे तो तुम्हीं हो। तुम्हीं पर हमारा मोह भी है। चिट्ठी नहीं लिखते हो तो बाबा का ओना हो जाता है। अच्छे2 बच्चों की चिट्ठी नहीं आती है तो समझता हूँ कि अच्छे2 बच्चों को भी माया एकदम खतम कर देती है। जरूर देहअभिमान है जो बाप को पत्र नहीं लिखते हैं। बाबा कहते रहते हैं बच्चे,अपनी खुश खैरियाफत लिखो। बाबा ऐसी बात पूछते हैं जो दुनियां में कोई नहीं पूछते। बाप पूछते हैं तुमको कहीं माया तो हैरान नहीं करती है?बहादुर बनकर माया पर जीत पहन रहे हो?तुम युद्ध के मैदान में हो। कर्मइन्द्रियां ऐसी वश में करनी चाहिए जो कुछ भी चंचलता नहीं हो। सतयुग में सभी कर्मइन्द्रियां वश में रहती हैं। ना मुख की,ना कान की,ना हाथ की कोई चंचलता की बातें वहां नहीं होती हैं। कोई भी

गंदी चीज होती नहीं है। यहां योगबल से कर्मेन्द्रियों पर कन्ट्रोल करते हैं। बाप कहते हैं कोई भी गंदी–––बात पहले नहीं होती। कर्मेन्द्रियों को वश में करना है अच्छी रीति पुरुषार्थ करना है। समय बहुत थोड़ा है। गायन भी है कि बहुत गई थोड़ी रही। नया मकान बनता रहता है। तो यह बुद्धि में रखना है कि बाकी थोड़ा समय है। –––यह तैयार हो जावेंगे। यहां है हद की बात, वो है बेहद की बात। यह भी तुम बच्चों को समझाया है उनका है साइंस बल तुम्हारा है साइलेंस बल। है उनका भी बुद्धि बल। तुम्हारा भी बुद्धि बल। साइंस की कितनी इन्वेंशन निकालते रहते हैं। अभी ता ऐस2 बाम्ब्स निकालते रहते हैं कि कहते हैं कि वहां बैठे ही बाम्ब्स छोड़ेंगे तो सारा का सारा शहर ही खतम हो जावेगा। फिर––––एरोप्लेन आदि कुछ भी काम में नहीं आवेगा। तो वो है साइंस की बुद्धि। तुम्हारी है साइलेंस की बुद्धि। वो विनाश के लिए निमित्त बने हैं और तुम अविनाशी पद पाने लिए। यह सब समझने की बुद्धि चाहिए। देखो, बाप कितना सहज रास्ता बताते हैं। भल कितनी भी अहिल्यायें ,कुब्जायें हैं। सिर्फ दो ही अक्षर याद करवाना है। बाप और वर्सा। फिर जितना जो याद करे। और संग तोड़ एक बाप को याद करना है। बाप कहते हैं मं जब अपने घर में था तो तुम भक्तिमार्ग में कितना पुकारते थे। बाबा आप आवेंगे तो हम सब कुछ कुरबान करेंगे। बलिहार जावेंगे। यह हुआ जैसे कि करणीगोर। करणीगोर को सब पुराना सामान दिया जाता है। इस समय तुम सब बच्चे करणीगोर हो। बाप लेकर क्या करेंगे?तुम इनको तो नहीं देते हो ना। इसने भी सब कुछ दे दिया। यह थोड़े ही यहां बैठकर महल आदि बनावेंगे। यह सब शिवबाबा के लिए है। उनके ही डायरैक्शन से कर रहे हैं। वो करनकरावनहार है। बच्चे कहते हैं बाबा हमारे लिए एक आप ही है। आपके लिए तो बहुत बच्चे हैं। बाबा फिर कहते हैं हमारे लिए सिर्फ तुम बच्चे हो। तुम्हारे लिए तो बहुत हैं। कितने देह के सम्बंधों की याद रहती है। मीठे2 बच्चों को बाप कहते हैं जितना हो सके बाप को याद करो और सबको भूलते जाओ। स्वर्ग की राजाई का माखन तुमको–– मिलता है जरा खयाल तो करो। कैसे यह खेल की रचना है। तुम सिर्फ बाप को याद करते हो और स्वदर्शचकधारी बनने पर चकवर्ती राजा बनते हो। अभी तुम बच्चे प्रैक्टिकल में अनुभवी हो। मनुष्य तो समझते हैं भक्ति परम्परा से चली आती है। विकार भी परम्परा से ही चले आये हैं। तुम ल. ना. ,राम–सीता को भी बच्चे तो हैं ना। अरे हां, ––––––––––––––––––––––; परंतु उनको कहा जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी। यहां पर सब हैं सम्पूर्ण विकारी। एक–दो को गालियां देते रहते हैं। वहां थोड़े––––––––। अभी तुम बच्चों को बाप के श्री2 के श्रीमत मिलती है। तुमको श्रेष्ठ बनाते हैं। अगर बाप का कहना नहीं मानेंगे तो–– फिर थोड़े ही बनेंगे। ––––––––––सपूत बच्चे तो फौरन मानेंगे। पूरी मदद नहीं देते हैं तो अपने को ही ;घाटाद्ध डालते हैं। बाप कहते हैं मैं कल्प2 आता हूँ। कितना पुरुषार्थ करवाता हूँ। कितना खुशी में ले आता हूँ। तुम फिर से बेहद के बाप से वर्सा ले रहे हो। इसमें कोई गफलत नहीं करनी चाहिए। माया करावेगी जरूर ;परंतु उनके (फंदे) में नहीं फंसो। माया से ही लड़ाई होती है। बहुत बड़े2 तूफान आवेंगे। उसमें भी –––––पर जास्ती वार करेगी। रुस्तम से रुस्तम होकर लड़ेगी। ऐसे वैद्य दवा देते हैं तो बीमारी बाहर निकल आती है। यहां भी मेरे बनेंगे तो फिर सबकी याद आने लग जावेगी। तूफान आवेंगे। इसमें तो लाइन क्लीयर चाहिए। हम पहले नंगे आये थे। पवित्र थे। फिर आधा कल्प से अब अपवित्र बने हैं। अब फिर वापस जाना है। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो इस योग की अग्नि से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। जितना याद करेंगे उतना ही उंच पद पावेंगे। याद करते तुम घर चले जावेंगे। अब वो जिस्मानी यात्रा की बक–बक बंद। शास्त्रों की बक–बक बंद। बिल्कुल अंतर्मुखता चाहिए। –––तुम कहते हो (हे)पतित–पावन ज्ञान का सागर, शांति का सागर, सुख का सागर। तो जो मेरे पास है वा अब तुमको दे देते हैं। (बाकी)सिर्फ दिव्य दृष्टि की चाभी नहीं देता हूँ। उसे बदले में मैं तुमको विश्व का मालिक बनाता हूँ। सा. में कुछ नहीं है। ––––––––––––––––––––––––